कहानी

हैसियत

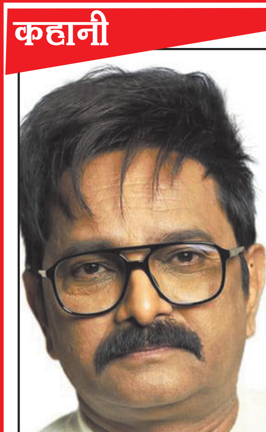

श्रीकुमार दत्त

जिस दिन सौम्यब्रत छठी कक्षा में हमारे स्कूल में आया, हम सब बाकी बच्चे दंग रह गए. गोरा रंग, करीने से कंघी किए हुए बाल. एक स्वस्थ रूप जो उत्तर प्रदेश के हमारे छोटे से कस्बे में देखने को नहीं मिलता. महंगे फ्रेम वाला चश्मा, करीने से प्रेस की हुई स्कूल यूनिफ ॉर्म. मैं पूरे सप्ताह एक ही यूनिफॉर्म पहनता हूंए रविवार को उसे धोता हूं और सोमवार से पुन: पहनता हूं.. प्रेस करने की कोई परंपरा नहीं है. उसके पैरों में पॉलिश किए हुए और चमकदार जूते हैं. मेरे जूते दो साल पुराने हैं. पिताजी ने उन्हें एक साइज़ बड़ा खरीदा था ताकि अगर वे पूरी तरह फट न जाएँ तो उन्हें हर साल खरीदना न पड़े. बाद में मुझे पता चला था कि सौम्यब्रत की यूनिफॉर्म और जूते, दोनों ही जोड़े में हैं. धोबी हर तीन दिन में यूनिफॉर्म धोता और इस्त्री करता है और मोची हफ़्ते में एक बार जूते पॉलिश करने आता है.अपने चश्मे की वजह से सौम्यब्रत की स्थायी सीट पहली बेंच पर थी. उसके ठीक पीछे मैं बैठा करता था . उसके शरीर से आती महंगे परफ्यूम की मीठी ख़ुशबू पूरी क्लास को मंत्रमुग्ध कर देती थी.

सौम्यब्रत का स्कूल में अलग ही स्थिति था. उसके पिता एक बड़े बैंक में मैनेजर थे जो गुवाहाटी से ट्रांसफर होकर हमारे शहर आए थे. जब भी वे हमारे स्कूल आते, प्रिंसिपल सर उनका गर्मजोशी से स्वागत करते. चाय पर बातें करते. सौम्यब्रत बंगाली होते हुए भी एकदम सही हिंदी बोल लेता था. और उसकी फर्राटेदार अंग्रेज़ी ! हम उसके आस.पास भी नहीं पहुँच पाते थे. लेकिन वह अक्सर स्कूल नहीं आता था. और अपनी अनुपस्थिति का कारण बताते हुए एक मज़बूत अंग्रेज़ी वाला आवेदन पत्र देता थाए जिसे पढ़कर क्लास टीचर चुप हो जाते थे. लेकिन वे हममें से दूसरे मेधावी छात्रों को आदेश देते थे कि वे सौम्यब्रत को उसकी अनुपस्थिति के दिनों के क्लास नोट्स दे दें. वे भी बिना कुछ कहे आदेश का पालन करते थे. बेशक, स्कूल के बाद सौम्यब्रत उनके लिए आइसक्रीम, पानीपूरी या समोसा का तोहफ़ा ज़रूर रखता था. इतना ही नहीं, एक बार जब सौम्यब्रत अपने माता.पिता के साथ मुंबई और गोवा की दो हफ़्ते की यात्रा पर गया, तो वाइस-प्रिंसिपल के आदेश पर बाकी छात्रों ने बारी.बारी से अलग-अलग विषयों पर नोट्स लिखे. जल्द हीए हमारी पहली टर्म की परीक्षाएँ आ गईं. जब नतीजे आएए तो पता चला कि सौम्यब्रत ने अंग्रेज़ी में सबसे ज़्यादा नंबर हासिल किए थे और बाकी विषयों में भी बहुत अच्छा था. लेकिन गणित में उसके नंबर बहुत खराब थे. आश्चर्य की बातए अगले ही दिन से हमारे वाइस.प्रिंसिपल ने उसे ट्यूशन देना शुरू कर दिया ! उसके बाद किसी भी विषय में कोई भी सौम्यब्रत को मात नहीं दे सका .

सौम्यब्रत को हमारी भोजपुरी हिंदी समझ में नहीं आती थी, इसलिए स्कूल में उसकी किसी से खास दोस्ती नहीं हुई. उसकी अमीरी की वजह से हम भी एक तरह की हीन भावना से ग्रस्त थे. एक दिन ऑफ पीरियड के दौरान लोड शेडिंग हो गई. ज़ाहिर है, यह रोज़ की बात थी. लेकिन उस दिन सौम्यब्रत ने अपने स्वभाव के विपरीत कुछ किया. अचानक, वह गीदड़ की तरह ऊँची आवाज़ में चिल्लाया. बस. प्रिंसिपल सर धड़धड़ाते हुए क्लास में आए और मुझे आगे पाकर, मेरे बाल पकड़कर पीठ के बल चार घूँसे मारे. मैं हक्का-बक्का रह गया . मुझे क्यों कुटा ! मैं प्रिंसिपल सर की गलतफ़हमी का शिकार हो गया. शायद यही है, करे कोईए भरे कोईष. मुझे अपना बचाव करने का मौका ही नहीं मिला. तन से ज़्यादा मन में दर्द हुआ. खैरए स्कूल के बाद मेरा मन हल्का हुआ जब सौम्यब्रत ने आकर मेरा हाथ थामा और कहा सॉरी यार मुकेश. मेरी वजह से तुम्हें इतनी मार पड़ी. अच्छा. चलो आज मेरे घर चलते हैं. साथ में टिफिन खाएँगे.नके दोस्ताना व्यवहार की वजह से मैं सब कुछ भूलकर उनके साथ हो लिया.

सौम्यब्रत के घर गया तो आँखें खुली की खुली रह गईं ! उनका क्वार्टर एक बड़ी इमारत की पूरी तीसरी मंजिल पर फै ला हुआ था. . घंटी बजते ही एक नौकरानी ने दरवाज़ा खोला और सौम्यब्रत की पीठ से किताबों का बैग उतार लिया. .हमें नाश्ता दो, भूख लगी है.. सौम्यब्रत बोला. तुम हाथ-मुँह धोकर आओ बाबू मैं मेज़ पर खाना लगा रही हूँ. यह कहकर वह अंदर चली गई. दरवाज़े से अंदर आते ही मैंने ड्राइंग रूम देखा, करीने से सजा हुआ. स्टैंड पर एक बड़ा सा टीवी, एक वीसीडी प्लेयर के साथ. उसके बगल में डाइनिंग एरिया था, बीच में एक बड़ी सी डाइनिंग टेबल, एक तरफ़ फ्रिज. फ्रिज के बगल में कोल्ड ड्रिंक्स की बोतलों से भरा एक कैरेट रखा था. मैंने रसोई में एक रसोइया को देखा . शायद वह हमारे लिए नाश्ता बना रही थी. रसोई के दोनों ओर दो शयनकक्ष थे. एक में मैंने सौम्यब्रत की माँ को बिस्तर पर बैठकर पत्रिका पढ़ते देखा. दूसरा कमरा सौम्यब्रत का था. हर कमरे में एक एयर-कूलर लगा था. मैं सोच भी नहीं सकता था कि सबके अलग-अलग कमरे होंगे ! माता-पिता, भाई-बहन और हम पांच लोग एक ही कमरे में रहते हैं. उनके बाथरूम भी अलग-अलग हैं. सौम्यब्रत के कमरे में घुसते हुए मुझे शर्म आ रही थी. बिस्तर पर सफ़ेद चादरें करीने से बिछी थीं, स्टडी टेबल अच्छी तरह से सजा हुआ था, और उस पर एक कंप्यूटर रखा था. मैं सोच भी नहीं सकता था कि किसी के पास अपना कंप्यूटर हो ! कमरे में कहीं धूल नहीं थी. वही नौकरानी झाड़ू.पोंछा लगा रही थी. इसी बीच, हमारे लिए गरमागरम चाउमीन से भरी प्लेटें और रसगुल्ले के कटोरे आ गए. फ्रिज से कोल्ड ड्रिंक्स की दो बोतलें निकलीं. मैंने पेट भर खाया और थोड़ी देर बाद उस दिन के लिए अलविदा कह दिया.

मैं अपने अस्त-व्यस्त, सादे घर लौट आया, लेकिन सौम्यब्रत की जीवनशैली मुझे लुभा रही थी. पर अंदर ही अंदर मुझे पता था कि उनके बराबर होना एक सपना था. क्योंकि मेरे पिता लगभग छह महीने में उतना कमा लेते थे जितना सौम्यब्रत के पिता एक महीने में कमाते थे. खैर, उस दिन से मैं सौम्यब्रत का चहेता बन गया. मैं अक्सर उनके घर जाता था और उनकी शानो-शौकत का आनंद लेने का कोई मौका नहीं छोड़ता था. समय के साथ, हम सातवीं कक्षा में पदोन्नत हो गए. सौम्यब्रत के घर मेरा आना-जाना बढ़ गया. मैं अपनी छुट्टियों की दोपहरें उनके साथ आराम से बिताता. कूलर की ठंडी हवा में बैठकर हम वीसीडी वाली नई फ़िल्में देखते. हालाँकि हमारे शहर में दो टॉकीज़ थीं, सौम्यब्रत का परिवार वहाँ नहीं जाता था क्योंकि वे उनके स्तर के नहीं थे. इसके बजाय, वे सीडी खरीद कर घर पर ही फ़िल्में देखते. जब भी कोई अच्छी फ़िल्म रिलीज़ होती, वे कार किराए पर लेकर बनारस जाकर उसे देखते. हम घर के बने पॉपकॉर्न और कॉफ़ी या कोल्ड ड्रिंक्स के साथ फ़िल्में देखते थे. इन्वर्टर होने के कारण लोड शेडिंग की कोई चिंता नहीं थी. शाम को सौम्यब्रत मुझे हमारे इलाके की महंगी खाने की दुकान मिठाई महल से तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने खरीदने ले जाता. मुझे इसमें से अपना हिस्सा ज़रूर मिलता था. मैंने पहली बार उनके घर में पिज्जा खाया. हालांकि मेरा परिवार पारंपरिक रूप से पूरी तरह शाकाहारी है, फिर भी मैंने एक बार उनके घर में मटन का स्वाद चखा था. मैं खुद को इस लालच से नहीं रोक पाता था.

इस अनमोल दोस्ती का भी एक नकारात्मक असर हुआ. मैं अपने बचपन के बाकी दोस्तों से दूर होने लगा. क्योंकि तब तक मैं खुद को उनसे भिन्न समझने लगा था. मुझे घर का माहौल भी पसंद नहीं था. ऐसा लग रहा था जैसे मैं साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंदजी की कहानी नशा का पात्र श्वीर बन गया हूँ. लेकिन सबसे बुरी बात यह थी कि इस चक्कर में मेरी पढ़ाई भी चौपट होने लगी थी. यह देखकर एक दिन हिंदी के शिक्षक ने कहा . सुनो मुकेश, जिससे तुम इतना घुल-मिल रहे होए वह एक अमीर बाप का बेटा है. उसे भविष्य की कोई चिंता नहीं है. तुम्हारे पिता तुम्हें एक ही कक्षा में दो बार पढ़ाने का खर्च नहीं उठा सकते. जब तक समय है, खुद पर काबू रखो. मैंने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया.

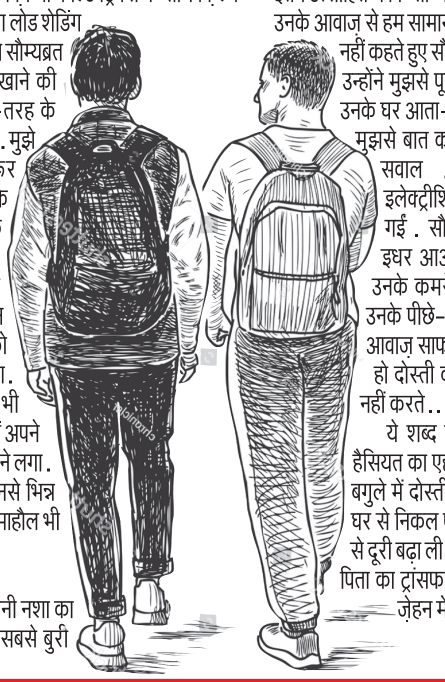

उस समय, एक सुबह जब मैं स्कूल जाते हुए सौम्यब्रत को बुलाने गया, तो उसने कहा कि उसका स्कूल जाने का मूड नहीं है. उसने मुझे भी न जाने को कहा. उसने यह भी कहा कि वह एक सीडी लाया है, हम साथ में नई फिल्म देख सकते हैं. क्या यह लुभावना प्रस्ताव ठुकराया जा सकता है . उस दिन हम सौम्यब्रत के कंप्यूटर पर फिल्म देखने बैठ गए. किसे पता था कि आज मुझे निराशा हाथ लगेगी. जब फिल्म शुरू हुई, तो पता चला कि यह एक अश्लील फिल्म थी. मैंने ऐसी फिल्मों के बारे में सुना तो था, पर कभी हिम्मत करके देखने की कोशिश नहीं की. लेकिन मैं ऐसे फ़िल्मों के पोस्टर चोर-छिपे सड़क किनारे की दीवारों पर या सिनेमाघरों के सामने देखा करता था. सौम्यब्रत भी हैरान था ! दुकानदार से ज़रूर कोई गलती हुई थी. लेकिन वर्जित चीज़ें देखने की उत्सुकता शायद कभी शांत नहीं होती. हमारी उभरी हुई दो जोड़ी आँखें कंप्यूटर स्क्रीन पर चिपकी हुई लग रही थीं. मुझे अपने शरीर में कुछ बदलाव महसूस हो रहा था. साँसें तेज़ हो रही थीं. सिनेमा से आ रही कुछ अजीब सी ध्वनियों से मुश्किल पैदा हुई . हम इतने उत्साहित थे कि सौम्यब्रत की माँ कब आ गई, पता ही नहीं चला. उनके आवाज़ से हम सामान्य हुए . ये कैसी आवाज़ है कुछ नहीं, कुछ नहीं कहते हुए सौम्यब्रत ने जल्दी से कंप्यूटर बंद कर दिया. उन्होंने मुझसे पूछा . तुम्हारा नाम क्या है मैं बहुत दिनों से उनके घर आता-जाता रहा हूँ, पर आज पहली बार उन्होंने मुझसे बात की थी. मैंने अपना नाम बताया तो दूसरा सवाल . तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं, इलेक्ट्रीशियन. मेरा जवाब सुनकर उनकी भौंहें तन गईं . सौम्यब्रत के पिताजी बैंक मैनेजर हैं. सौम्य, इधर आओ, कुछ बात करनी है.यह कहकर वह उनके कमरे में चली गई. सौम्यब्रत भी डरते-डरते उनके पीछे-पीछे गया. तभी मुझे सौम्यब्रत की माँ की आवाज़ साफ़ सुनाई दी . किसके साथ संगति कर रहे हो दोस्ती करने से पहले अपनी हैसियत का ख्याल नहीं करते..

ये शब्द सुनकर मेरा मोहभंग हो गया. अपनी हैसियत का एहसास हुआ. मुझे पता चला कि कौए और बगुले में दोस्ती नहीं हो सकती. मैं सिर झुकाकर उनके घर से निकल पड़ा. उस दिन से मैंने धीरे-धीरे सौम्यब्रत से दूरी बढ़ा ली. जैसे-जैसे साल बीतते गएए सौम्यब्रत के पिता का ट्रांसफर हो गया और वे चले गए. सौम्यब्रत मेरे ज़ेहन में बस एक याद बनकर रह गया.

लघुकथाएं

निर्मूल आशंका

रेखा शाह आरबी

निक्की की अभी कुछ दिन पहले ही शादी हुई थी ..उसकी फ्रेंडो ने उसे बहुत डराया था .. बच्चू अब तो तेरी शादी हो रही है तेरी जिंदगी की सारी प्राइवेसी और फ्रीडम तो अब खत्म ही समझ.. अब तो तू संयुक्त परिवार में जा रही है , अब तो तेरी जिन्दगी में किचन और बच्चे संभालना ही रहेगा.

शादी के चौथे दिन ही सभी मेहमानों के जाने के बाद नीचे गली में कोई फेरीवाला आवाज लगा रहा था. शायद लाख की चूड़ियां बेच रहा था ...लाख की चूड़ियां ले लो... लाख की चूड़िया, निक्की की सासू मां शायद पहले से उस फेरी वाले को जानती थी, अत: वह नीचे चली गई चूड़ियां लेने, निक्की भी अपने कमरे में आराम करने के लिए आ गई, नई बहु थी जाकर चूड़ी लेने में संकोच था,और वैसे भी उसे शादी में बहुत सारी चूड़ियां अभी मिली थी तो उसकी जरूरत भी नहीं थी.

शाम को वह खाना बनाने में लग गई , लेकिन उसे हल्का-हल्का फीवर था, खाना बनाकर वह अपने रूम में मेडिसिन लेने के लिए चली आई, अभी वह मेडिसिन खोज ही रही थी , तब तक उसकी सासू मां सुषमा उसके कमरे में चली आई ... निक्की बेटा... देखो तो यह चूड़ियां मैं तुम्हारे लिए ली है क्या पसंद है ?

निक्की चूड़ियां लेकर देखने लगी उसे वाकई बहुत पसंद आई थी , उसकी सास की पसंद वाकई काबिले तारीफ थी, सुषमा ने उसके चेहरे की ओर देखा तो वह बोली... क्या है बात है निक्की बेटा.. आखिर तुम्हारा चेहरा इतना बुझा क्यों है ? उन्होंने उसके माथे को छुआ तो चौक कर बोली... तुम्हें इतना बुखार है और शाम से इतना काम कर रही हो एक बार बता देती... हम सब लोग मिलकर कर लेते .

निक्की को दवाई देने के बाद और आराम करने के लिए बोलकर नीचे चली गई और उस दिन एक भी काम को छूने नहीं दिया.

निक्की कमरे में बैठे हुए सोच रही थी.. मां भी चेहरे को देखकर अंदाजा लगा लेती थीं कि मैं बीमार हु..और सासू मां भी चेहरे को देखकर मेरे बीमार होने का अंदाजा लगा ले रही हैं, मां भी मेरे ऊपर क्या अच्छा लगेगा उस हिसाब से दिल से चूड़ियां लातीं थी और सासू मां भी दिल से लातीं हैं. आखिर दोनों में अंतर क्या है .. मेरी फ्रेंड सब बेकार में बकवास करके मुझे डरा रखीं थीं...सास और मां में कोई अंतर नहीं हैं .. बुखार के बावजूद निक्की मुस्कुराने लगी आखिर उसे ससुराल में मां मिल गई थी.

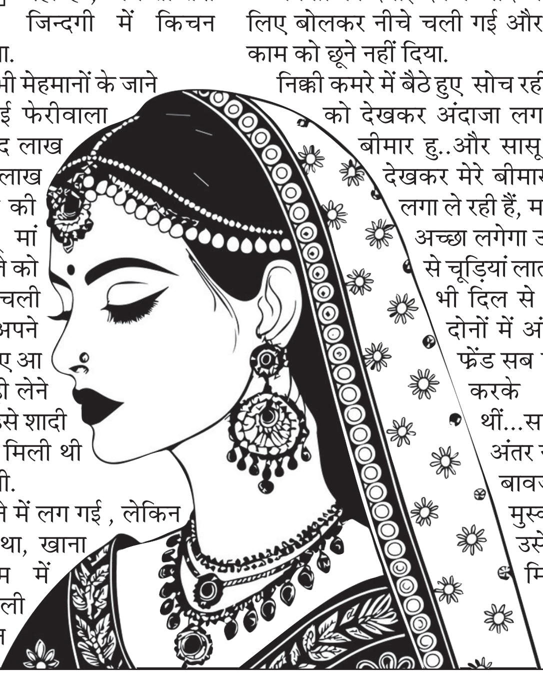

सोशल मीडिया !

अशोक वाधवाणी

युवा आलोक रोज़ाना सुबह उठकर ब्रश करने के पहले मोबाइल खंगालता. वाट्सएप से शुरू किया हुआ उसका सफ़र फेसबुक, इंस्ट्राग्राम और ट्यूटर तक पहुंचा. देखते-देखते फेसबुक पर 5000 फ्रेंड्स बन गए. आभासी दुनिया का स्टार बन गया. आलोक को दिन-रात मोबाइल पर चिपके रहने की लत से चिंतित पिता आत्माराम ने बेटे को इससे दूरी बनाए रखने की सलाह दी. प्यार से समझाने के बावजूद आलोक पर उसका कोई असर नहीं हुआ. अब वे उसे डांटने-फटकारने लगे. उसका मोबाइल छीनने लगे. इससे आलोक आग-बबूला होकर चीखने-चिल्लाने लगा. तंग आकर आत्माराम को मजबूरन मोबाइल देना पड़ता.

एक दिन आत्माराम जबरदस्ती आलोक को शाम के समय एक काउंसलर के पास ले गए. उन्होंने सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण होने वाले दुष्परिणामों , परेशानियों पर सशक्त ढ़ंग से प्रकाश डाला. काउंसलर की लच्छेदार बातों का आलोक पर गहरा प्रभाव पड़ा. उसने वादा किया स्मार्ट फ़ोन से दूरी बनाए रखने का. रात को सोने से पहले फेसबुक से होने वाले दुष्परिणाम वाली पोस्ट फेसबुक पर डालकर, निश्चिंत होकर सो गया.

सुबह उठकर ब्रश करके चाय पी. उसके बाद समाचार पत्र पढ़ा. थोड़ा न्यूज़ चैनल देखा. याद आने पर मोबाइल खंगाला. गहरी सोच में डूबकर उदास हुआ. किसी ने भी उसको पोस्ट को पसंद या उस पर कमेंट नहीं किया था. आलोक ने गुस्से से मोबाइल रख दिया. रात को सोने से पहले चेक किया तो फिर वही ढाक के तीन पात ! दुखी होकर सोचने लगा, इसके पहले दिवंगत अभिनेता सदाबहार देव आनंद जी पर एक पोस्ट लिखी थी, जिसे 521 लोगों ने लाइक किया था. 53 लोगों ने कमेंट और 17 लोगों ने शेयर भी किया था. इतने फौलोवर्स के होते हुए भी ऐसी उदासीनता क्यों ? मजबूरन मित्र जुगनू को फ़ोन करके कारण जानना चाहा. जुगनू ने कहा, पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर करोगे तो यही परिणाम होगा. जुगनू के जवाब ने उसे आईना दिखा दिया.

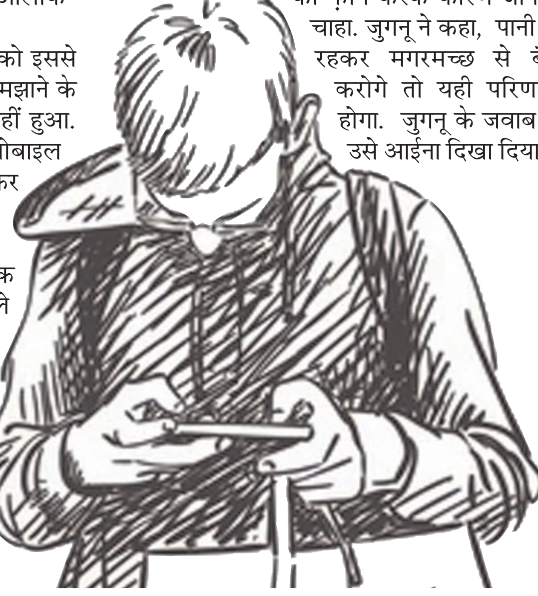

विलुप्ति की कगार पर छल्ला बोलो और अडल्या-घडल्या

परंपरा

मदन लाल वर्मा

सभ्यता और संस्कृति के विकास में पर्व या उत्सवों का महत्वपूर्ण स्थान है. क्वार सुदी पड़वा (प्रतिप्रदा)से केल्या पूनम (शरद पूर्णिमा) तक मालवा के ग्रामीण क्षेत्रों के गांवों में बरसों से प्रथा प्रचलित थी छल्ला - बोला व अल्ड्या - घल्डया. गांव के गली-मोहल्लों में अविवाहित लड़के अलग-अलग टोली में छल्ला- बोला मांगते हैं. इसी तरह अल्ड्या - घल्ड्या में भी लड़कियां दशहरे से पूनम तक समूह में गाती हैं. एक लड़की के सिर पर छिद्रयुक्त घड़ा रखती हैं, जिसमे दीपक जल रहा होता है. फिर घर-घर जाकर गाते हुए अनाज व पैसा एकत्र करती हैं.

मालवा-निमाड़ में ग्रामीण क्षेत्रों में सैकड़ों वर्ष पुरानी परंपरा आज भी कायम है. इसे गड़बिया,गड़ब्या भी कहते है. यह एक पारंपरिक बच्चों का खेल है, गली मोहल्लों में सुनाई देने वाले लोकगीतों की सैकड़ों वर्ष पुरानी संस्कृति से ज़ुड़ा हुआ है. यह प्रथा कब और कहाँ से आई यह बताना असंभव है. छल्ला एक लोकगीत शैली है. कहते है, यह गीत एक नाविक के बेटे की कहानी है,जो दुर्भाग्य से एक दिन नदी में डूब जाता है. यह गीत छल्ला के अपने इकलौते बेटे छल्ला को खोने के दुख को बयां करता है. इस गीत को कई गायकों ने गाया है. इसमें पीढ़ी दर पीढ़ी बच्चों की सहभागिता बनी हुई है. गांवों की संस्कृति और परंपराओं में बसती है भारतीय संस्कारों की आत्मा.

छल्ला बोलो गाते बच्चे

आधुनिकीकरण और तकनीकी क्रांति ने नगरीय संस्कृति के बहाने पाश्चात्य संस्कृति को दबे पांव देश में पसरने का मौका दिया है.इसके बाद भी ग्रामीण अंचलों में आज भी परंपराओं के नाम पर कई संदेश और शिक्षा बची है.

त्योहारों के देश भारत मे हर 5- 50 कोस की दूरी पर परंपराओं का स्वरूप ,खानपान, रहन- सहन, वेशभूषा, बोलचाल और बोली भी बहुत कुछ बदली-बदली सी नजर आती है. शाम होते ही गीत गाते हुए घर-घर पहुंच दान लेते है. लड़के ज्वार के पौधे और लड़कियां छेद किए हुए मिट्टी के घड़े लेकर निकलती है. 5 से 12 साल तक के बच्चे अपनी तोतली व स्थानीय भाषा में छल्ला बोला गाते है. वही कई बच्चे घास-फूंस बांधकर रीछ- वानर बनकर नृत्य कर ग्रामीणों को आकर्षित करते है, ग्रामीण जन उन्हे अनाज गेहूं,ज्वार,मक्का,मूंगफली और नगद राशि भी देते हैं. बालक /बालिका अनाज और पैसे का संग्रहण कर पूनम पर भोज का आयोजन करते है.

कही - कही इसे रावण का नुक्ता भी करते है. राम द्वारा रावण के मारे जाने पर उसका नुक्ता (मौसर) किया जाता है. नर्मदा किनारे नेमावर कन्नौद,खातेगांव, कांटाफोड़ से सटे ग्रामीण क्षेत्रों में नुक्ता कार्यक्रम होता है. यहां मिट्टी का रावण बनाया जाता है. उसके प्रतीकात्मक वध के बाद मिट्टी को बच्चे घर ले जाते है. फिर टेसू के रूप में आकृति बना सजाते है.कई बच्चे बक्से में रख लाइट लगा आकर्षक रूप में सजाते हैं. इसकी शुरुआत दशहरे के दूसरे दिन से होती है.रोजाना शाम को गलियों व चौराहों पर टेसू गीत गूंजते है. अपने - अपने टेसू लेकर बच्चे नाच-गाने के साथ छल्ला (दान) मांगते है. बच्चों के अलग- अलग समूह को कहीं से पैसा,तो कहीं से दाल, आटा और चावल मिल जाता है. बहुत सी सामग्री इकट्ठा हो जाती है. नुक्ते में दाल -बाटी, चूरमा बनाया जाता है. हाटपिपल्या, चापड़ा क्षेत्र के ग्राम गुराडिया कला में यह परंपरा है कि यहां के तीन ब्राह्मण परिवार भरजी,चौबदार व व्यास परिवार द्वारा अपनी - अपनी बारी अनुसार प्रतिवर्ष काली मिट्टी से रावण की प्रतिमा बनाई जाती है. विश्वकर्मा मंदिर के पास विधि - विधान से पूजा की जाती है. तोमर परिवार तलवार से रावण की नाभि भेदकर वध किया जाता है. वध के बाद मिट्टी बच्चे घर ले जाते और इसका छोटा सा पुतला बनाकर बच्चे खोखे (बक्से) में सजा कर ग्यारस से पूनम तक रोज रात में घर - घर टेसू गीत गाते. टेसू आया टेस से .... पैसा निकालो जेब से ....हमारा टेसू यही अड़ा ....खाने को मांगता दही बड़ा .... टेसू की पगड़ी रस्सी की ..... वो भी अस्सी की ...इस प्रकार दान (छल्ला) मांगते है.सबसे अच्छा टेसू सजा होता है उसे पुरस्कार भी मिलता है.

अ.लडको के छल्ला गीत-- 1 छल्लो छापाजी की केडी रे नापा जी की गाय, धौली गाय- गाय लड़ी के तोड़ी घुघरमाल ...छल्लो बोलो... 2. लिप्यों छाब्यों आँगणों रे, तार - तार बिच्छू जाय, नानी भाभी के काट्यों के, अर - अर करती जाय .. छल्लों.. 3. काला खेत में कुदालों रे, नौ माणी को डूंड, चिकी मेलीगी पानो,के धईग्यो बदरियों ऊंट.. छल्लों ...

ब.लड़कियों के लोकगीत-- अल्डयों - घल्डयों लाडलो, सेरी रमतो जाय रे भई, सेरी लागा उंदरा, चू - चू करता जाय रे भई. एक और बानगी है-- अन्नी लायों पन्नी लायों, लाख रूप्या की लाड़ी लायो, घाघरा की घेर लायो, बीछ्या की झमझोल लायाँ , देती होय तो दईदे ओ पड़ोसन ....

निमाड़ के लोकगीत- कुआं की मेंढ़की ने,तीखा - तीखा कान. सासू बऊ लड़ी पड़ी,काट खाया कान ..छल्लों ...2 सोला बाटी चूल्हा पाछे,फिर भी मारे नाल ... छल्लों.. 3 नदी - नदी दिया बले, कूण जनावर जाय,हरण को बच्चों छलांग मारे जा .. छल्लों ...इसी प्रकार लड़कियों के द्वारा गाए जाने वाले गीतों में बाई बड़ी घर देख्यों जैसे अनेक कर्ण प्रिय गीत शामिल है. पूनम (पूर्णिमा) पर इन लोकगीतों की आवाज थम जाती है.

संपादकीय बोर्ड प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

क्लास by बड़े भाई

भिड़े तो पाएंगे, बचे तो खोएंगे

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, जीवन में जिस तरह मृत्यु निश्चित है उसी तरह जीवन में चुनौतियाँ निश्चित हैं. इसे हम जितना जल्दी स्वीकार लें उतना अच्छा है. कुछ चुनौतियों को हम अपने अनुभव और ज्ञान से सहज सुलझा लेते हैं लेकिन कुछ चुनौतियाँ हमारे सारे अनुभव और ज्ञान को चुनौती देने वाली होती हैं.

इन चुनौतियों से दो तरह से हम सब निकला करते हैं. पहला बचकर और दूसरा कुछ हासिल कर. घाव तो दोनों में लगते हैं लेकिन कुछ लोग चुनौती को कुछ बड़ा हासिल कर डालते हैं. वो सही मायने में चुनौती को जवाब देने वाले माने जाते हैं. बचकर निकलने वालों को चुनौती भी परेशान नहीं करती.

अब बात यह है छोटे भाई कि चुनौतियों को अवसर मे कैसे बदला जाए तो आपको एक चुनौतियों के प्रति आपको एक नजरिया देता हूँ. यदि आपने चुनौतियों से घबराने के बजाय उस नजरिए से भिड़ेंगे तो पूरा विश्वास है कुछ बढ़िया हासिल करके निकलेंगे.

जब भी कोई चुनौती आपने सामने खड़ी हो तो यह विश्वास कीजिए कि वो आपके पास आपदा नहीं अवसर लेकर आई है. यह नजरिया रामजी को रावण की नाभि कुंड का रहस्य पता लग जाने जैसा होगा. इससे आपके भीतर चुनौती से डर नहीं बल्कि उसमें अवसर ढूँढ़ने का हौसला बलवती होगा. अब धैर्य के साथ आप उससे सामना करने के लिए जो हथकंडे अपनाएंगे उसी में से आपके लिए अवसर का पिटारा खुलेगा. उदाहरण के लिए, कोरोना काल में जब मास्क की आवश्यकता पड़ी तो कई लोग मास्क घरों में बनाने लगे थे और आपदा में आमदनी का एक माध्यम ढूँढ़ लिया था. आपको पता होगा लोगों ने उस समय खूब पैसे बनाए. सब कुछ जब बंद हो गया था तो अनलाइन क्लास खोलकर लोगों ने पढ़ने पढ़ाने का रास्ता खोजा और न जाने कितने शिक्षकों को लोगों ने उसी समय से जाना और चुनौतियों को मुहटोंड जवाब दिया. इसी बीच कुछ लोग ऐसे भी रहे जिन्होंने इस आपदा में बस किसी तरह समय काटते रहे.

छोटे भाई, कहना यह चाहता हूँ कि चुनौतियों से अवसर हमारे नजरिए से निकलता है. भिड़ेंगे तो कुछ बड़ा पा जाएंगे ,बचेंगे तो कुछ बड़ा खो जाएंगे. बस इतनी सी बात है , यही कहना था .. धन्यवाद.

कविता

सेनापति

बिन्दु तिवारी

बूढ़ी औरतें,
होती है सेनापति,
पुरुष वर्ग की सेना की.

वह होती हैं, पुरुष द्वारा लिखित संविधान की
नीति निदेशक तत्व ,
वह बनाए रखती हैं उस संविधान
के सिद्धांत, आदर्श और जीवंतता

जिसके मूल में घोटती जाती है,
नई अंकुरित हुई औरतों के सपने ,
इच्छाएं और अधिकारों को .
और अंतत: वह सिद्ध होती हैं संस्कृति,
संस्कार और परंपरा की संवाहक

पर अब बूढ़ी औरतें ,
त्यागपत्र दे रही है
अपने इस पद से .
अब औरत ही औरत की दुश्मन होती है
इस मुहावरे को मिटा कर वह
गढ़ रही है नया मुहावरा .